KIRORI MAL COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT OF HISTORY

welcomes you to a talk
remembering the legacy of

VIJAY SINGH 'PATHIK':
AN UNSUNG HERO OF INDIA'S FREEDOM STRUGGLE

CONTRIBUTION TO JOURNALISM & LITERATURE:

He wrote 32 books covering history, politics, literature, satire, and translations.

1. जेल में हदया ऐतिहासिक बयान
2. चुनाव-पद्धतियां और जनता
3. पथिक प्रमोद (कहानी संग्रह)
4. पथिक विनोद (कविता संग्रह)
5. प्रह्लाद विजय (खंडकाव्य)
6. सुखिया-सुरेश (नाटक)
7. What are Indian States
8. अजयमेरू (ऐतिहासिक उपन्यास)
9. आलोचना
10. इतिहास का अध्ययन
11. उलट-पुलट (हास्य-व्यंग्य)
12. वैज्ञानिक वेदान्त - दर्शन
13. गणपति (ऐतिहासिक नाटक)
14. गणराज्य पद्धति
15. गांव के हकीम जी (चिकित्सा)
16. नारी जाति का इतिहास
17. पथिक जी के जेल पत्र
18. पथिक निबंधावली (भाग एक और दो)
19. पथिक प्रमोद (कहानी संग्रह) (दूसरा भाग)
20. पथिक विनोद (कविता संग्रह) (भाग दो और तीन)
21. बकरा भाई (राजनीतिक उपन्यास)
22. भारतीय राजनीति के तत्व
23. राजस्थान की मूल संस्कृति
24. रामलाल (नाटक)
25. वांछनीय जीवन (निबंध)
26. वेदों में विश्व-इतिहास
27. कल्पना-कल्लोल (गद्य काव्य) भाग एक और दो
28. स्वराज (राजनीतिक सिद्धांत)
29. पथिक जी के पत्र
30. जीवन-स्मरण (आत्मकथा)

Additionally, he translated the following works:

31. अध्यापक और अभिभावक (टॉल्सटॉय की प्रसिद्ध पुस्तक)
32. गरीबों का स्वराज (प्रिंस क्रोपाटकिन की प्रसिद्ध पुस्तक 'Conquest of Bread')

KIRORI MAL COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT OF HISTORY

welcomes you to a talk
remembering the legacy of

VIJAY SINGH 'PATHIK':

AN UNSUNG HERO OF INDIA'S FREEDOM STRUGGLE

किसानों का झण्डा

लहरावेगो, लहरावेगो, झण्डो यो किरसानाणां को
घर महलां पर, मींदरांपे, कोट किला पर, भंडारां पै
गांव-गली में बाजारांपै, पुर द्वारापै दीवारापै,
यो हलमण्डित ध्वज निशान है कसां का अरमांना को।
लहरावेगो, लहरावेगो-झण्डो..... ।
घणां सो चुक्या, जाग उठ्या हाँ, आलस त्याग उठ्या हाँ,
घणो सह चुक्या, अब न सहांगा, लेकर गांव स्वराज्य रहांगा,
देख लिया मंत्रयां का लक्खण, स्वार्थ धरम धनवानां को।
लहरावेगो, लहरावेगो-झण्डो..... ।
घड़ी घड़ी धोखा दे देकर, वोट किसानां का ले लेकर,
म्हाँ पर ही थाँ छुरी चलाई, सेवा बढ़िया थाँ की भाई,
अब न चलैगी म्हाँ पर जादू थाँ शहरी शैताना को।
लहरावेगो, लहरावेगो-झण्डो..... ।
गांधी की छाप लगाकर, चरखा का झण्डो फहराकर,
खूब दुकान चलाई थांने, लूट प्रजा सब खाई थाने,
अब यो ब्लेक नहीं चलवा को, धोखा की दुकान्यां को।
लहरावेगो, लहरावेगो-झण्डो..... ।
अब न कणी की साख भरांगा, म्हांको परबंध म्हई करांगा,
पंच बोर्ड कैंसिल सब ही माँ, वोट किसानों ने म्हाँ दांगा।
अब न मिलेगो ठेको थाँने, जंगलात को खान्यां को।
लहरावेगो, लहरावेगो-झण्डो..... ।
छूत-अछूत किसान, बलाई, सब मिल एकट करलो भाई,
सब मिलकर पंचायत थापो, एकट सूं सारो दुख काटो,
मत गांवां में जमबा दो अब, पंजो अब श्रीमानां को।
लहरावेगो, लहरावेगो-झण्डो..... ।
गृह-उद्योग चलावांगा म्हें, पक्को माल बनावांगा म्हें,
घर-घर अलख जगावांगो म्हें, सबने ज्ञान सिखवांगो म्हें,
बली बणांगा क्यूं कि जगत में, सब कुछ है बलवानां को।
लहरावेगो, लहरावेगो-झण्डो ..... ।

-विजय सिंह 'पथिक'
(राजस्थान के बिजौलिया किसान आन्दोलन के प्रणेता)

KIRORI MAL COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT OF HISTORY

welcomes you to a talk
remembering the legacy of

VIJAY SINGH 'PATHIK':

AN UNSUNG HERO OF INDIA'S FREEDOM STRUGGLE

"न भूल जाना खुशी के दिन तुम, वतन परस्तों के वे फसाने,
कि जिनके बदले हुए मुख्यसर, ये जश्न महफिल और तराने,
लेटो पलंग पर तब याद करना उन नौजवानों की जान बाज़ी,
जिन्होंने फांसी के तख्तों पर ही, थे नींद लेने को पैर ताने ।।"

- विजय सिंह 'पथिक'

KIRORI MAL COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT OF HISTORY

welcomes you to a talk
remembering the legacy of

VIJAY SINGH 'PATHIK':

AN UNSUNG HERO OF INDIA'S FREEDOM STRUGGLE

राजस्थानी लोकगीतों में जनक्रांति नायक विजय सिंह 'पथिक'

म्हाने विजेसिंह आय जगायो, ए मायं थारो गुण नहीं भूलां।
मांने जूत्या सू पिटता बचाओ, ए माय थारो गुण मैं नहीं भूलां ।।
मांका टाबराने वीर बणाया, ए मांय थारो गुण. ।
मांको डूबती जाति ने बचाई, ए मांय थारो गुण. ।।
मांने देश-प्रेम सिखलायो, ए मांय थारो गुण. ।
मांने सारो सांचो ज्ञान करायो, ए मांय थारो गुण. ।।
मांने सत्याग्रह को पाठ पढ़ायो, ए मांय थारो गुण. ।
राजवाला ने नीचो दिखायो, ए मांय थारो गुण मैं नहीं भूलां ।।

KIRORI MAL COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT OF HISTORY

welcomes you to a talk
remembering the legacy of

VIJAY SINGH 'PATHIK':

AN UNSUNG HERO OF INDIA'S FREEDOM STRUGGLE

TITLES ATTRIBUTED TO VIJAY SINGH 'PATHIK'

Rashtriya Pathik (by Mahatma Gandhi)
Kranticheta
Kisan Bhayla
Krishak Mitra

LINGUISTIC PROFICIENCY:

Well-versed in multiple languages, including: Hindi, Sanskrit, Urdu, Punjabi.

KIRORI MAL COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT OF HISTORY

welcomes you to a talk
remembering the legacy of

VIJAY SINGH 'PATHIK':
AN UNSUNG HERO OF INDIA'S FREEDOM STRUGGLE

"भारत का राष्ट्रीय जीवन और अधिक उलझनों से भरा हुआ है, अतएव अभी वास्तविक स्वतन्त्रता को प्राप्त. करने, देश की राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करने के लिए पुनः कार्यरत होना होगा जन-जागरण का कार्य करना होगा।"

- विजय सिंह 'पथिक'

KIRORI MAL COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT OF HISTORY

welcomes you to a talk
remembering the legacy of

VIJAY SINGH 'PATHIK':

AN UNSUNG HERO OF INDIA'S FREEDOM STRUGGLE

"बन गया क्रान्तिकारी अब भूपसिंह भी था योजना बहुत ही
गोपनीय उनमें ठहरी, योजना बहुत ही भायी भूपसिंह को वह
वह हो क्रियान्वित, ली उसने थी रुचि गहरी।

अब राजस्थानी धरती भूपसिंह को दी दायित्व बहुत बोझिल
था, लेकिन स्वीकारा, जुट गया वीर संगठन कार्य में तेजी से
बह चली क्रान्ति की वीर-धरा पर थी धारा।

रख लिया नाम था भूपसिंह ने विजयसिंह अब विजयसिंह
उपनाम 'पथिक' ही चलता था, अंग्रेजों ने सोचा, यह नया
क्रान्तिकारी यह नया रूप भी उसका, उनको खलता था।"

- **श्रीकृष्ण सरल**
(1919-2000)
उज्जैन, मध्यप्रदेश

KIRORI MAL COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT OF HISTORY

welcomes you to a talk
remembering the legacy of

VIJAY SINGH 'PATHIK':

AN UNSUNG HERO OF INDIA'S FREEDOM STRUGGLE

झंडा गीत

हमारे देश के सबसे पहले झंडा गीत का श्रेय पथिक जी को ही जाता है ।

26 जनवरी 1930 को समस्त देश में स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा लेने का दिवस मनाया गया था । उस अवसर पर जो गीत समस्त भास्तवर्ष में एक स्वर में गाया गया वह विजय सिंह पथिक जी द्वारा रचित झंडा गीत था ।

प्राण मित्रों भले ही गंवाना, पर न झंडा यह नीचे झुकाना ।।
तीन रंगा है झंडा हमारा, बीच चरखा चमकता सितारा ।।
शान है ये ही इज्जत हमारी, सिर झुकाती इसे हिंद सारी ।।
इस पै सब कुछ खुशी से चढ़ाना ।
पर न झंडा ये नीचे झुकाना ।।
ये है आजादपन की निशानी, इसके पीछे हैं लाखों कहानी ।।
जिंदा दिल ही हैं इसको उठाते मर्द हैं इस पै सर तक चढ़ाते ।।
तुम भी सारी मुसीबत उठाना ।
पर न झंडा ये नीचे झुकाना ।।
रे! क्या भूले हो जलियां वाला, या वो डायर का इतिहास काला ।।
गोलियों की लगी जब झड़ी थी, नींव आजादी की तब पड़ी थी ।।
याद हो गर वो हूं में नहाना ।
तो न झंडा ये नीचे झुकाना ।।
उसने तो था न क्या जुल्म ढाया, पेट के बल पै हमको चलाया ।
कोसों बच्चों को पैदल भगाया, माओं-बहनों को घर-घर रुलाया ।।
याद है तुम्हें जो वह फसाना ।
तो न झंडा ये नीचे झुकाना ।।
और अब भी न क्या हो रहा है, कौन सुख की नींद में सो रहा है ।
लोग पाते न भर पेट खाना, सच्च बोलो तो है जेलखाना ।।
है इसी से छिड़ा यह तराना ।
होना आजाद या मिट ही जाना ।।
पर यह करलो अहद पर मिटेंगे, पर न इस व्रत से तिलभर हटेंगे ।
कुछ हो यह मुल्क आजाद होगा, उजड़ गुलशन ये आबाद होगा ।
गायेंगे आज सब ये गाना ।
हिन्द होगा, न अब जेल खाना ।।
झंडा यह हर किले पर चढ़ेगा, इसका दल रोज दूना बढ़ेगा ।।
तीरो तलवार बेकार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे ।।
सब कहेंगे कि सर है कटाना । पर न झंडा ये नीचे झुकाना ।।
शांत हथियार होंगे, पर वे तोड़ेंगे अरि के दुधार ।।
पर भला हो जो अंग्रेज जागे, लोभ हिन्दी हुकुमत को त्यागे ।।
वरना बदला है क्या यह ठिकाना ।
उनसे बदलेगा सारा जमाना ।
हे प्रभो! शक्ति दो वीर हों हम, टेक रक्खेंगे सर्वस्व खो हम ।।
हम ही क्या, कह उठे सब जमाना, दूध देखो न माँ का लजाना ।।
प्राण अपने भले ही गंवाना ।
पर न झंडा ये नीचे झुकाना ।।